Original Article
ISSN(Online): 2584-0983
https://shikshasamvad.com/

Shiksha Samvad
International Open Access, Peer Reviewed & Refereed Journal
© Shiksha Samvad|Volume-04| Issue-01| September- 2026
DOI: - https://doi.org/10.64880/shikshasamvad.v4i1.25

पूर्व–माध्यमिक विद्यालयों में आधारभूत साक्षरता एवं संख्याज्ञान आधारित शिक्षण के माध्यम से विद्यार्थियों के भाषा एवं गणितीय अधिगम कौशल के विकास का अध्ययन

सरिता यदु[1], डॉ. ईश्वर प्रसाद यदु[2]

[1]शोधार्थी, शिक्षा विभाग, श्री रावतपुरा सरकार विश्वविद्यालय, रायपुर, (छ.ग.)

[2]गाईड, विभागाध्यक्ष, शिक्षा विभाग, श्री रावतपुरा सरकार विश्वविद्यालय, रायपुर, (छ.ग.)

Email: ishwaryadu86@gmail.com, Email: saritayadu9@gmail.com

सारांश

आधारभूत साक्षरता एवं संख्याज्ञान वर्तमान भारतीय विद्यालयी शिक्षा व्यवस्था की प्रमुख प्राथमिकताओं में से एक है। राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 के पश्चात् आधारभूत साक्षरता एवं संख्याज्ञान को मजबूत करने के लिए निपुण भारत मिशन प्रारंभ किया गया। इसका उद्देश्य बच्चों में समझ के साथ पढ़ने, लिखने तथा मूलभूत गणितीय अवधारणाओं को समझने और उनका दैनिक जीवन में प्रयोग करने की क्षमता विकसित करना है। राष्ट्रीय पाठ्यचर्या रूपरेखा, आधारभूत चरण 2022 भी बच्चों में भाषायी, संज्ञानात्मक तथा संख्यात्मक क्षमताओं के विकास को प्रारंभिक शिक्षा का महत्वपूर्ण आधार मानती है।

अध्ययन वर्णनात्मक एवं विश्लेषणात्मक प्रकृति का है तथा मुख्यतः द्वितीयक स्रोतों पर आधारित है। राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020, निपुण भारत दिशा–निर्देश, राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान एवं प्रशिक्षण परिषद् के आधारभूत अधिगम अध्ययन, राष्ट्रीय पाठ्यचर्या रूपरेखा, विद्यालयी शिक्षा से संबंधित नवीनतम सरकारी आँकड़ों तथा उपलब्ध शैक्षिक साहित्य का विषयगत विश्लेषण किया गया है। आधारभूत अधिगम अध्ययन 2022 को विशेष संदर्भ के रूप में लिया गया है, क्योंकि इसमें आधारभूत साक्षरता एवं संख्याज्ञान की उपलब्धि के लिए राष्ट्रीय स्तर पर आधारभूत जानकारी और दक्षता–मानक विकसित करने का प्रयास किया गया था।

1. प्रस्तावना

शिक्षा व्यक्ति के ज्ञान, कौशल, दृष्टिकोण और व्यवहार के विकास का प्रमुख माध्यम है। विद्यालयी शिक्षा के प्रारंभिक वर्षों में विकसित होने वाली भाषा एवं गणितीय क्षमताएँ विद्यार्थी के आगे के शैक्षिक जीवन की आधारशिला होती हैं। यदि बच्चा प्रारंभिक स्तर पर पढ़ने, समझने, लिखने, संख्या पहचानने और मूलभूत गणितीय समस्याओं को हल करने में सक्षम नहीं होता, तो आगे की कक्षाओं में उसके लिए विषय–वस्तु को समझना कठिन हो सकता है।

भारत में सामाजिक, आर्थिक, भौगोलिक तथा भाषाई विविधता के कारण विद्यार्थियों के सीखने के अनुभव समान नहीं होते। अनेक विद्यार्थी विद्यालय में प्रवेश के समय अलग–अलग स्तर की भाषायी एवं संख्यात्मक क्षमताएँ लेकर आते हैं। इसलिए विद्यालयी शिक्षण में ऐसी पद्धतियों की आवश्यकता है जो विद्यार्थियों की विविध आवश्यकताओं को ध्यान में रखते हुए उन्हें सीखने के पर्याप्त अवसर प्रदान करें।

राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 ने आधारभूत साक्षरता एवं संख्याज्ञान को शिक्षा व्यवस्था की सर्वोच्च प्राथमिकताओं में शामिल किया। इसके पश्चात् निपुण भारत मिशन प्रारंभ किया गया, जिसका लक्ष्य कक्षा 3 के अंत तक बच्चों में आधारभूत साक्षरता एवं संख्याज्ञान की अपेक्षित दक्षताओं का विकास करना है। राष्ट्रीय पाठ्यचर्या रूपरेखा, आधारभूत चरण 2022 भी प्रारंभिक वर्षों में भाषायी, संज्ञानात्मक और सामाजिक–भावनात्मक क्षमताओं के विकास को आगे के अधिगम की आधारशिला मानती है।

2. समस्या कथन

आधारभूत साक्षरता एवं संख्याज्ञान से संबंधित अनेक नीतिगत एवं कार्यक्रमगत प्रयासों के बावजूद विद्यार्थियों के अधिगम स्तर में विविधता बनी हुई है। कई विद्यार्थी पाठ को पढ़ तो लेते हैं, परंतु उसका अर्थ पूरी तरह समझ नहीं पाते। इसी प्रकार कुछ विद्यार्थी संख्याओं की पहचान तो कर लेते हैं, लेकिन वास्तविक जीवन से जुड़ी गणितीय समस्याओं को हल करने में कठिनाई अनुभव करते हैं।

इस समस्या का एक कारण शिक्षण–पद्धति और विद्यार्थी की वास्तविक सीखने की आवश्यकता के बीच अंतर भी हो सकता है। यदि शिक्षण केवल पाठ्यपुस्तक, रटने और लिखित अभ्यास तक सीमित रहता है, तो विद्यार्थियों में समझ, तर्क और समस्या–समाधान की क्षमता पर्याप्त रूप से विकसित नहीं हो सकती। अतः प्रस्तुत अध्ययन की मुख्य समस्या इस प्रकार निर्धारित की गई है–

"पूर्व–माध्यमिक विद्यालयों में आधारभूत साक्षरता एवं संख्याज्ञान आधारित शिक्षण के माध्यम से विद्यार्थियों के भाषा एवं गणितीय अधिगम कौशल के विकास का अध्ययन।"

3. संबंधित साहित्य की समीक्षा

आधारभूत साक्षरता एवं संख्याज्ञान के क्षेत्र में उपलब्ध नीतिगत दस्तावेजों एवं अध्ययनों से यह स्पष्ट होता है कि प्रारंभिक भाषा एवं गणितीय क्षमताएँ आगे के अधिगम के लिए अत्यंत महत्वपूर्ण हैं। राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 ने आधारभूत साक्षरता एवं संख्याज्ञान को शिक्षा व्यवस्था की सर्वोच्च प्राथमिकताओं में रखा है। नीति की भावना यह है कि प्रत्येक बच्चा प्रारंभिक वर्षों में पढ़ने, समझने और मूलभूत गणितीय क्षमताओं में दक्षता प्राप्त करे।

निपुण भारत दिशा–निर्देशों में आधारभूत भाषा एवं साक्षरता, संख्याज्ञान, मूल्यांकन तथा बाल–केंद्रित शिक्षण–पद्धतियों पर बल दिया गया है। शिक्षक प्रशिक्षण में भाषा, संख्याज्ञान, मूल्यांकन तथा खेल एवं खिलौना आधारित शिक्षण जैसे विषयों को शामिल करने की बात कही गई है।

राष्ट्रीय पाठ्यचर्या रूपरेखा, आधारभूत चरण 2022 बच्चों के संज्ञानात्मक एवं भाषायी विकास को प्रारंभिक शिक्षा का केंद्रीय उद्देश्य मानती है। इसमें अधिगम को केवल विषय–वस्तु के संचार के रूप में न देखकर अनुभव, गतिविधि और विकासात्मक प्रक्रिया से जोड़ा गया है।

आधारभूत अधिगम अध्ययन 2022 ने भारत में आधारभूत साक्षरता एवं संख्याज्ञान की स्थिति को समझने के लिए महत्वपूर्ण आधार उपलब्ध कराया। अध्ययन में पठन, पठन–बोध, मौखिक भाषा तथा संख्याज्ञान से संबंधित क्षमताओं को मापने का प्रयास किया गया और निपुण भारत के लिए आधारभूत स्थिति निर्धारित करने में सहायता मिली।

विद्यालयी शिक्षा के व्यापक संदर्भ में यूडीआईएसई प्लस के नवीनतम उपलब्ध आँकड़े भी महत्वपूर्ण हैं। 2023–24 के आँकड़ों के अनुसार भारत की विद्यालयी शिक्षा व्यवस्था में लगभग 14.72 लाख विद्यालय, 98 लाख से अधिक शिक्षक और लगभग 24.8 करोड़ विद्यार्थी सम्मिलित थे। उपलब्ध साहित्य के समग्र अध्ययन से यह संकेत

मिलता है कि आधारभूत अधिगम की गुणवत्ता केवल विद्यार्थी की व्यक्तिगत क्षमता पर निर्भर नहीं करती, बल्कि शिक्षक की शिक्षण–पद्धति, विद्यालयी वातावरण, शिक्षण सामग्री, भाषा, मूल्यांकन और पारिवारिक सहयोग जैसे कारक भी महत्वपूर्ण हैं।

4. अध्ययन की आवश्यकता

आधारभूत साक्षरता एवं संख्याज्ञान को राष्ट्रीय प्राथमिकता दिए जाने के बावजूद कक्षा में इसके वास्तविक क्रियान्वयन और विद्यार्थियों के भाषा एवं गणितीय कौशल के विकास के बीच संबंध का अध्ययन आवश्यक है। अध्ययन की आवश्यकता निम्न आधारों पर अनुभव होती है–

- विद्यार्थियों के प्रारंभिक भाषा एवं गणितीय कौशल में विविधता पाई जाती है।
- केवल पाठ्यपुस्तक आधारित शिक्षण से सभी विद्यार्थियों की सीखने की आवश्यकताएँ पूरी नहीं हो सकतीं।
- गतिविधि एवं अनुभव आधारित शिक्षण की उपयोगिता का अध्ययन आवश्यक है।
- पठन–बोध को केवल पठन गति से अलग करके देखना आवश्यक है।
- गणितीय अधिगम में संख्या–बोध एवं समस्या–समाधान पर पर्याप्त ध्यान आवश्यक है।
- बहुभाषी कक्षाओं में भाषा शिक्षण की रणनीतियों को समझना आवश्यक है।
- सतत एवं निदानात्मक मूल्यांकन विद्यार्थियों के सीखने की कठिनाइयों की पहचान में सहायक हो सकता है।
- आधारभूत अधिगम की गुणवत्ता आगे की शैक्षिक उपलब्धियों को प्रभावित कर सकती है।
- इसलिए आधारभूत साक्षरता एवं संख्याज्ञान को विद्यार्थियों के वास्तविक अधिगम कौशल से जोड़कर अध्ययन करना प्रासंगिक है।

5. अध्ययन के उद्देश्य

प्रस्तुत अध्ययन के उद्देश्य निम्नलिखित हैं–

- आधारभूत साक्षरता एवं संख्याज्ञान की अवधारणा का अध्ययन करना।
- विद्यार्थियों के भाषा अधिगम कौशल के प्रमुख आयामों की पहचान करना।
- विद्यार्थियों के गणितीय अधिगम कौशल के प्रमुख आयामों का अध्ययन करना।
- आधारभूत साक्षरता आधारित शिक्षण की उपयोगिता का विश्लेषण करना।
- आधारभूत संख्याज्ञान आधारित शिक्षण की भूमिका का अध्ययन करना।
- गतिविधि–आधारित शिक्षण के महत्व का विश्लेषण करना।
- बहुभाषी शिक्षण की उपयोगिता का अध्ययन करना।
- शिक्षण–अधिगम सामग्री एवं मूल्यांकन की भूमिका का अध्ययन करना।
- आधारभूत अधिगम में आने वाली प्रमुख चुनौतियों की पहचान करना।
- आधारभूत साक्षरता एवं संख्याज्ञान के प्रभावी क्रियान्वयन हेतु सुझाव प्रस्तुत करना।

6. शोध पद्धति

प्रस्तुत अध्ययन वर्णनात्मक एवं विश्लेषणात्मक शोध पद्धति पर आधारित है। अध्ययन में मुख्यतः द्वितीयक स्रोतों का उपयोग किया गया है।

अध्ययन का स्वरूप

अध्ययन का स्वरूप दस्तावेजीय एवं विश्लेषणात्मक है। विभिन्न सरकारी नीतियों, दिशा–निर्देशों, राष्ट्रीय अध्ययनों तथा शैक्षिक दस्तावेजों का अध्ययन करके विषयगत निष्कर्ष विकसित किए गए हैं।

स्रोत

- अध्ययन के लिए निम्न स्रोतों का उपयोग किया गया–
- राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020।
- निपुण भारत दिशा–निर्देश।
- राष्ट्रीय पाठ्यचर्या रूपरेखा, आधारभूत चरण 2022।
- राष्ट्रीय पाठ्यचर्या रूपरेखा, विद्यालयी शिक्षा 2023।
- आधारभूत अधिगम अध्ययन 2022।
- यूडीआईएसई प्लस प्रतिवेदन।
- राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान एवं प्रशिक्षण परिषद् की सामग्री।
- संबंधित शोध एवं शैक्षिक साहित्य।

6.3 विश्लेषण की प्रक्रिया

उपलब्ध सामग्री को निम्न प्रमुख विषयों के आधार पर व्यवस्थित एवं विश्लेषित किया गया–

भाषा अधिगम ⟶ पठन ⟶ पठन–बोध ⟶ लेखन ⟶ गणितीय कौशल ⟶ संख्या–बोध ⟶ समस्या–समाधान ⟶ गतिविधि आधारित शिक्षण ⟶ मूल्यांकन ⟶ उपचारात्मक शिक्षण।

7. अध्ययन के उपकरण

यद्यपि प्रस्तुत अध्ययन द्वितीयक स्रोतों पर आधारित है, भविष्य में इसे क्षेत्रीय अध्ययन में परिवर्तित करने के लिए निम्न उपकरण उपयोगी होंगे–

- विद्यार्थी भाषा कौशल परीक्षण
- विद्यार्थी गणितीय कौशल परीक्षण
- शिक्षक प्रश्नावली
- कक्षा–अवलोकन अनुसूची

8. विश्लेषण एवं चर्चा

भाषा अधिगम

भाषा अधिगम में केवल शब्दों का उच्चारण पर्याप्त नहीं है। विद्यार्थी को पढ़े गए पाठ का अर्थ समझना और अपनी भाषा में विचार व्यक्त करना भी आवश्यक है। आधारभूत स्तर पर कहानी, कविता, चित्र, बातचीत और प्रश्नोत्तर जैसी गतिविधियाँ विद्यार्थियों के भाषा विकास में उपयोगी हो सकती हैं। इस प्रकार भाषा शिक्षण को केवल पाठ्यपुस्तक तक सीमित न रखकर वास्तविक जीवन के अनुभवों से जोड़ा जाना चाहिए।

पठन–बोध

पठन–बोध विद्यार्थियों की वास्तविक साक्षरता का महत्वपूर्ण संकेतक है। विद्यार्थी यदि किसी अनुच्छेद को पढ़ने के बाद उसके मुख्य विचार, पात्र, घटना या निष्कर्ष को समझ सकता है, तभी पठन को अर्थपूर्ण माना जा सकता है।

गणितीय कौशल

गणितीय अधिगम में संख्या पहचान से आगे बढ़कर संख्या–बोध, गणितीय संबंध और समस्या–समाधान पर ध्यान देना आवश्यक है।

विद्यार्थियों को वास्तविक वस्तुओं का उपयोग करके संख्या एवं मात्रा के बीच संबंध समझाया जा सकता है। इसी प्रकार दैनिक जीवन से जुड़ी समस्याएँ गणितीय सोच विकसित करने में उपयोगी हो सकती हैं।

गतिविधि–आधारित शिक्षण

गतिविधि–आधारित शिक्षण विद्यार्थियों को निष्क्रिय श्रोता के स्थान पर सक्रिय सहभागी बनाता है। भाषा एवं गणित दोनों में गतिविधियों के माध्यम से विद्यार्थियों को अभ्यास एवं अनुभव के अवसर मिलते हैं।

बहुभाषी शिक्षण

भारत में भाषाई विविधता को देखते हुए बच्चों की परिचित भाषा का शिक्षण में उपयोग महत्वपूर्ण है। परिचित भाषा के माध्यम से विद्यार्थी अवधारणा को आसानी से समझ सकता है और धीरे–धीरे विद्यालयी भाषा की ओर बढ़ सकता है।

शिक्षण–अधिगम सामग्री

शिक्षण–अधिगम सामग्री अमूर्त अवधारणाओं को ठोस अनुभवों में बदलने में सहायता करती है। गणित में गिनती की वस्तुएँ, संख्या कार्ड और आकृति मॉडल तथा भाषा में चित्र कार्ड, शब्द कार्ड और कहानी–पुस्तकों का प्रयोग उपयोगी हो सकता है।

मूल्यांकन

मूल्यांकन का उद्देश्य केवल अंक देना नहीं होना चाहिए। शिक्षक को यह जानना चाहिए कि विद्यार्थी क्या समझ चुका है और किस क्षेत्र में उसे सहायता चाहिए।

निदानात्मक मूल्यांकन से सीखने की कठिनाइयों की पहचान करके उपचारात्मक शिक्षण की योजना बनाई जा सकती है।

9. परिणाम

अध्ययन के विश्लेषण से निम्न प्रमुख निष्पत्तियाँ सामने आती हैं–

- आधारभूत साक्षरता एवं संख्याज्ञान विद्यार्थियों के आगे के शैक्षिक विकास के लिए महत्वपूर्ण आधार प्रदान करते हैं।
- भाषा अधिगम में पठन–बोध, मौखिक अभिव्यक्ति और लेखन को पठन प्रवाह के साथ समान महत्व दिया जाना चाहिए।
- गणितीय अधिगम में केवल गणना नहीं बल्कि संख्या–बोध, तार्किक चिंतन और समस्या–समाधान आवश्यक हैं।

- बहुभाषी दृष्टिकोण भारत जैसे भाषाई रूप से विविध देश में आधारभूत भाषा अधिगम को सहयोग प्रदान कर सकता है।
- सतत मूल्यांकन के माध्यम से विद्यार्थियों की सीखने की कठिनाइयों की समय पर पहचान की जा सकती है।
- उपचारात्मक शिक्षण कमजोर विद्यार्थियों के लिए आवश्यक सहयोग उपलब्ध कराने का माध्यम बन सकता है।
- शिक्षक की क्षमता एवं शिक्षण–पद्धति आधारभूत अधिगम की गुणवत्ता को प्रभावित करने वाले प्रमुख कारकों में हैं।
- विद्यार्थी के अधिगम को केवल विद्यालय तक सीमित नहीं माना जा सकताय परिवार एवं सामाजिक वातावरण की भी महत्वपूर्ण भूमिका है।

10. अध्ययन की सीमाएँ

प्रस्तुत अध्ययन की कुछ सीमाएँ हैं।

- पहली, यह अध्ययन मुख्यतः द्वितीयक स्रोतों पर आधारित है। इसलिए इसमें किसी विशिष्ट जिले या विद्यालय के विद्यार्थियों से प्रत्यक्ष रूप से आँकड़े एकत्र नहीं किए गए हैं।
- दूसरी, अध्ययन में वास्तविक क्षेत्रीय परीक्षण द्वारा विद्यार्थियों के भाषा एवं गणितीय कौशल का मापन नहीं किया गया है।
- तीसरी, विभिन्न राज्यों एवं क्षेत्रों में आधारभूत अधिगम के क्रियान्वयन में अंतर हो सकता है। इसलिए अध्ययन के निष्कर्षों को प्रत्येक विद्यालय या क्षेत्र पर समान रूप से लागू नहीं किया जा सकता।
- चौथी, शिक्षक की व्यक्तिगत दक्षता, विद्यालयी संसाधन, सामाजिक–आर्थिक पृष्ठभूमि तथा अभिभावकीय सहयोग जैसे कारकों का स्वतंत्र रूप से सांख्यिकीय परीक्षण इस अध्ययन में नहीं किया गया है।

11. निष्कर्ष

आधारभूत साक्षरता एवं संख्याज्ञान विद्यार्थियों के शैक्षिक विकास की आधारशिला हैं। भाषा एवं गणितीय कौशल केवल दो अलग–अलग विषयों की उपलब्धियाँ नहीं हैं, बल्कि वे विद्यार्थी की आगे सीखने, समझने, तर्क करने और समस्याओं का समाधान करने की क्षमता को प्रभावित करते हैं।

प्रस्तुत अध्ययन से स्पष्ट होता है कि आधारभूत साक्षरता आधारित शिक्षण में पठन–बोध, मौखिक भाषा और लेखन पर विशेष ध्यान आवश्यक है। इसी प्रकार संख्याज्ञान आधारित शिक्षण में संख्या–बोध, गणितीय संबंध, तार्किक चिंतन और समस्या–समाधान को प्राथमिकता दी जानी चाहिए।

12. भविष्य की संभावनाएँ

भविष्य में इस विषय पर प्राथमिक आँकड़ों के आधार पर अधिक व्यापक अध्ययन किए जा सकते हैं। विशेष रूप से निम्न क्षेत्रों में शोध की पर्याप्त संभावनाएँ हैं–

- आधारभूत साक्षरता एवं संख्याज्ञान आधारित शिक्षण का विद्यार्थियों की उपलब्धि पर वास्तविक प्रभाव।
- ग्रामीण एवं शहरी विद्यालयों की तुलनात्मक स्थिति।
- सरकारी एवं निजी विद्यालयों में आधारभूत अधिगम का तुलनात्मक अध्ययन।
- बहुभाषी एवं एकभाषी कक्षाओं में भाषा अधिगम की तुलना।

संदर्भ ग्रंथ

- भारत सरकार। (2020)। राष्ट्रीय शिक्षा नीति, 2020। शिक्षा मंत्रालय, भारत सरकार।
- शिक्षा मंत्रालय, भारत सरकार। (2021)। निपुण भारतः समझ के साथ पठन एवं संख्याज्ञान में दक्षता के लिए राष्ट्रीय पहलकृकार्यान्वयन हेतु दिशा–निर्देश। स्कूली शिक्षा एवं साक्षरता विभाग।
- शिक्षा मंत्रालय, भारत सरकार। (2021)। निपुण भारत मिशन। स्कूली शिक्षा एवं साक्षरता विभाग।
- राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान एवं प्रशिक्षण परिषद्। (2022)। आधारभूत अधिगम अध्ययन, 2022। नई दिल्ली।
- पारख, राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान एवं प्रशिक्षण परिषद्। (2022)। आधारभूत अधिगम अध्ययन। नई दिल्ली।
- राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान एवं प्रशिक्षण परिषद्। (2022)। आधारभूत चरण के लिए राष्ट्रीय पाठ्यचर्या रूपरेखा। नई दिल्ली।
- राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान एवं प्रशिक्षण परिषद्। (2023)। विद्यालयी शिक्षा के लिए राष्ट्रीय पाठ्यचर्या रूपरेखा। नई दिल्ली।
- शिक्षा मंत्रालय, भारत सरकार। (2024)। यूडीआईएसई प्लस प्रतिवेदन 2023द्24। नई दिल्ली।
- शिक्षा मंत्रालय, भारत सरकार। (2025)। यूडीआईएसई प्लस प्रतिवेदन 2024द्25। नई दिल्ली।
- राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान एवं प्रशिक्षण परिषद्। (2024)। विद्यालयी शिक्षा से संबंधित शैक्षिक एवं मूल्यांकन सामग्री। नई दिल्ली।
- राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान एवं प्रशिक्षण परिषद्। (2023)। आधारभूत चरण में अधिगम प्रतिफल। नई दिल्ली।

Cite the Article:

यदु, सरिता , यदु, डा. ईश्वर प्रसाद. (2026). पूर्व-माध्यमिक विद्यालयों में आधारभूत साक्षरता एवं संख्याज्ञान आधारित शिक्षण के माध्यम से विद्यार्थियों के भाषा एवं गणितीय अधिगम कौशल के विकास का अध्ययन. Shiksha Samvad International Open Access Peer-Reviewed & Refereed Journal of Multidisciplinary Research, 4(1) 225-231, ISSN: 2584-0983 (Online), Volume 04, Issue 01, September-2026.,
DOI: - https://doi.org/10.64880/shikshasamvad.v4i1.25

Disclaimer/Publisher's Note: The views, findings, and opinions expressed in this publication are solely those of the author(s). The publisher and editorial team are not responsible for any errors, claims, or consequences arising from the use of the published content.